अंक 07. दिसम्बर, 2023

वीथिका ई पत्रिका

साहित्य, संस्कृति, विज्ञान को समर्पित

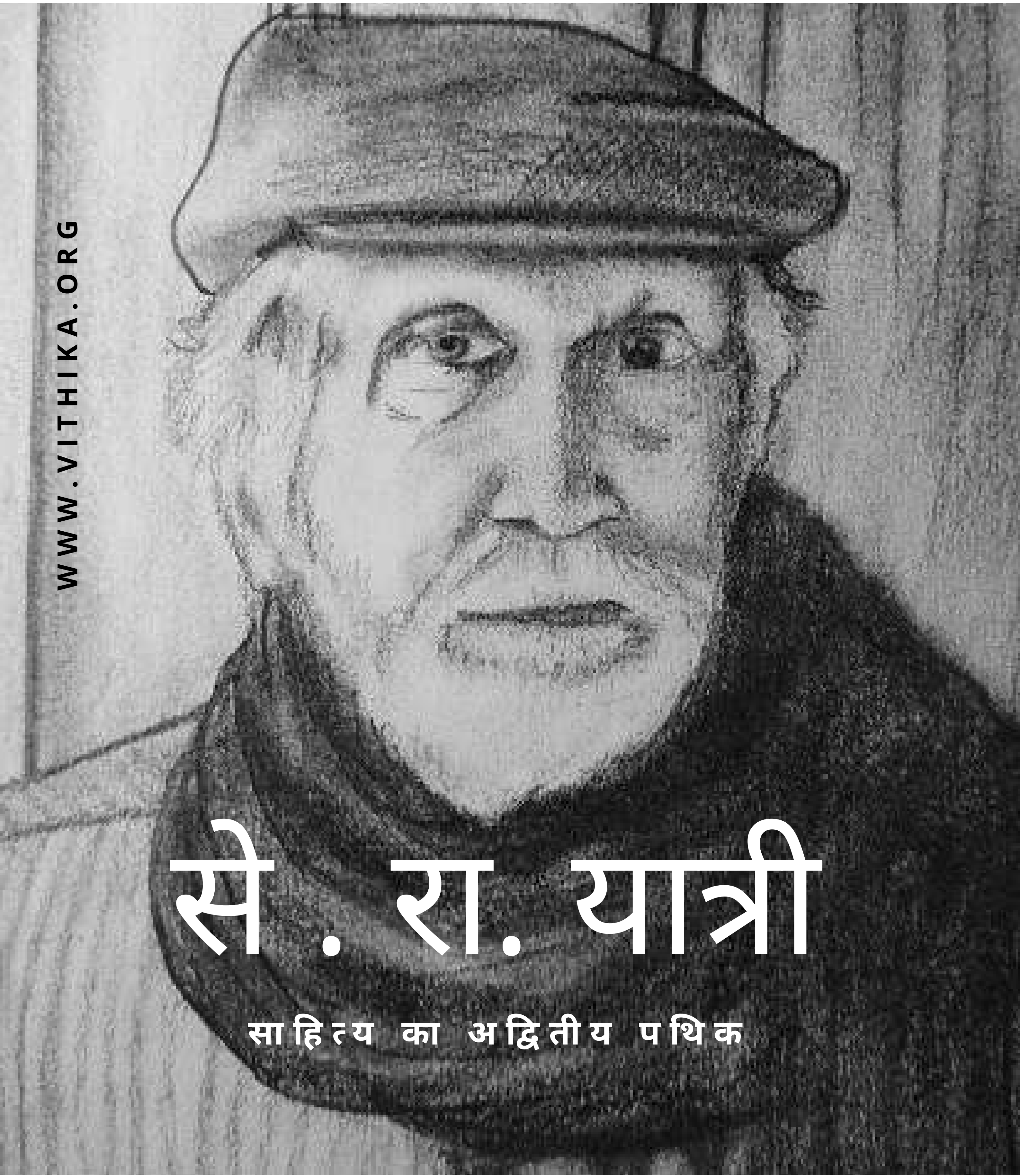

WWW.VITHIKA.ORG

से. रा. यात्री

साहित्य का अद्वितीय पथिक

वीथिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय	चित्रा मोहन	सुमित उपाध्याय
प्रधान संपादक	मुख्य सलाहकार संपादक	प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

श्री मनोज कुमार सिंह

श्री अविनाश पाण्डेय

डॉ अखिलेश पाण्डेय

जय श्री

डॉ शिवमूरत यादव

उज्जवल उपाध्याय

अश्विनी तिवारी

अर्चिता उपाध्याय

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

संरक्षक
यशिका फाउंडेशन, मऊ

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह

डॉ धनञ्जय शर्मा

डॉ सुधांशु लाल

एड. सत्यप्रकाश सिंह

बृजेश गिरि

श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
पूजा मद्धेशिया

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

आपकी वीथिका

अंक 07

दिसंबर , 2023

गलियों की बात 05

श्रद्धांजलि : से. रा. यात्री
07

संविधान दिवस 09

बैरिस्टर मो.क. गाँधी 13

आमों की टोकरी 17

प्राचीन राधा कृष्ण पंच मंदिर 19

ब्लागदारनस्त: अनुवाद 21

भूटान यात्रा : संस्मरण 22

कहानी -जोड़-घटाव 25

सोंधी मिट्टी 28

पाठक वीथी

अनीता रोहलान " आराध्य परी" जी की कविता 'किन्नर हूँ मैं " पर पाठक संतोष भाटी जी कहते हैं -
"बहुत सुंदर रचना लिखी है आपने। आपने ऐसे इंसान के दर्द को शब्दों में बयां किया है जो वाकई में समाज में तिरस्कृत और लाचार है। कुदरत की अनोखी रचना है वो उसे भी जिंदगी अपने हिसाब से जीने का हक है।"

प्रो. मोहम्मद ज़ियाउल्लाह जी के लेख "महात्मा" पर पाठक अजय देवबंशी जी टिप्पणी करते है -
"गांधी जी की पूरी जीवन गाथा इतने कम शब्दों मे कर ऐसे हैं जैसे गागर में सागर आपने समाहित कर दिया है..... और इस यात्रा वृतांत की सबसे अच्छी बात की अगर गांधी जी को समझना हैं तो उस काल परिस्थिति मे जाना पड़ेगा उसको समझना पड़ेगा..... ये सबसे ज्यादा प्रभावी हैं.... गांधी जी के विचारो को आपने बहुत ही आसानी से हमलोगों को समझाया ......"

विद्वत्त पाठक पत्रिका में प्रकाशित लेखों, कविताओं, कहानियों को हमारी वेबसाइट WWW.VITHIKA.ORG पर पढ़ और कमेंट कर सकते हैं . आप अपनी लेख या रचनाएँ हमें VITHIKAPORTAL @GMAIL.COM पर भेज सकते हैं

गलियों की बात

दिसम्बर , 2023

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

वरिष्ठ व्यंग्यकार, कथाकार, संपादक, उपन्यासकार सेवा राम यात्री जी के निधन पर वीथिका परिवार उन्हें सादर सुमन अर्पित करता है ।
किसी साहित्यकार, कलाकार, वैज्ञानिक, शिल्पकार की मृत्यु मात्र उसके शरीर का अवसान नहीं होता अपितु यह एक विचार-प्रक्रिया का रुक जाना भी होता है । और जब यह घटना किसी ऐसे साहित्यकार को लेकर हो जो अपने समय को लेकर काफी सचेत था, सजग था, निरंतर चिंतनशील था, जिसका स्पष्ट प्रमाण यात्री जी द्वारा हमारे लिए छोड़ा गया वह विशाल साहित्यिक भंडार है, तो समूचे समाज को रुक कर सोचना होता है । उस महान रचनाकार को, उसकी अनोखी यात्रा को सलाम करना होता है ।
ऐसे समय में जब हमारे जीवन से हास-परिहास, व्यंग्य समाप्त सा हो गया है, ना जाने कब वो रिक्तिता भरेगी जो से. रा. यात्री जी के जाने से आ गयी है।

मानवता के सहयात्री : से रा यात्री

कार्टूनिस्ट कृतिका सिंह, लखनऊ

गाज़ियाबाद की सड़को पर झोले में किताबों के संग रोटी लिए सेवा राम यात्री जी पैदल निकल पड़ते

ये रोटियां उन श्वानों हेतु थीं जिनका जीवन सड़क पर ही बीतता है

सडकों को पैदल नापने वाले साहित्यकार से अधिक उनकी पीड़ा आखिर पहचानता ही कौन ?

श्रद्धांजलि : से. रा. यात्री

साहित्य का अनोखा यात्री

सुमित उपाध्याय
प्रबंध संपादक

साहित्य वीथी

समकालीन साहित्य जगत के प्रसिद्ध संपादक, कथाकार, उपन्यासकार और व्यंग्यकार से. रा. यात्री जी का विगत 17 नवम्बर, 2023 को लम्बी बीमारी के बाद 91 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया । सेवा राम यात्री जी की साहित्यिक यात्रा बहुत बड़ी है । इनका जाना साहित्य की एक यात्रा का समाप्त होना है ।

साहित्य श्री, साहित्य भूषण, महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान से सम्मानित यात्री जी का रचना संसार बहुत बड़ा है । वर्तमान हिंदी साहित्य जगत में शायद ही कोई ऐसा रचनाकार होगा जिसकी साहित्यिक साधना ने रचनाओं का एक विशाल समुद्र निर्मित कर दिया हो । दराजों में बंद दस्तावेज, लौटते हुए, कई अँधेरों के पार, अपरिचित शेष, चाँदनी के आरपार, बीच की दरार, टूटते दायरे, चादर के बाहर, प्यासी नदी, भटका मेघ, आकाशचारी, आत्मदाह, बावजूद, अंतहीन, प्रथम परिचय, जली रस्सी, युद्ध अविराम, दिशाहारा, बेदखल अतीत, सुबह की तलाश, घर न घाट, आखिरी पड़ाव, एक

जिंदगी और, अनदेखे पुल, कलंदर और सुरंग के बाहर समेत कुल 33 उपन्यास, 1971 ई में "दूसरे चेहरे" नामक कथा संग्रह से प्रारम्भ इनकी कथा सरिता में केवल पिता, धरातल, अकर्मक क्रिया, टापू पर अकेले, अलग-अलग अस्वीकार, काल विदूषक, सिलसिला, अकर्मक क्रिया, खंडित संवाद, नया सम्बंध, भूख तथा अन्य कहानियाँ, अभयदान, पुल टूटते हुए, विरोधी स्वर, खारिज और बेदखल और परजीवी समेत 18 कथा संग्रह जुड़े जिसने लगभग 300 कहानियों का सागर बना दिया । किस्सा एक खरगोश का और दुनिया मेरे आगे जैसे दो शानदार व्यंग्य संग्रह रच कर हिंदी व्यंग्य साहित्य के सूनेपन को खत्म किया । संस्मरण विधा भी इनकी यात्रा से अछूती नहीं रही जिसका प्रमाण इनका संस्मरण लौटना एक वाकिफ उम्र का है ।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर के गाँव जड़ोदा में जन्मे सेवा राम यात्री जी ने अपने जीवन को अपने शर्तों पर जिया । इनके हाईस्कूल की एक घटना काफी रोचक है और जीवन को अपने ढंग से चलाने की इनकी प्रतिभा का प्रमाण भी देती है। यात्री जी का मूल नाम था सेवा राम अग्रवाल, जो इन्हें तीन शब्द का होने के कारण विशेष प्रिय न था सो जब आप हाईस्कूल का फॉर्म भर रहे थे तो अपने मन से बिना किसी को बताये उसमे सेवा राम यात्री कर दिया । परीक्षा हुई और कुछ दिनों बाद रिजल्ट भी आये । उस समय रिजल्ट अख़बारों में आता था । इनके विद्यालय की सूची में घरवालों ने अपने सेवा राम का नाम बहुत ढूंढा । जब नाम न मिला तो सब आगबबुला हो गये । मनमौजी सेवा राम जी घर पहुंचे तो वहां हंगामा बरपा था । इन्होने अख़बार उठाया और अपना नया परिवर्तित नाम सूची में दिखाया । पास होने के बाद भी इस हरकत की वजह से पिता जी से बहुत डांट पड़ी । जो बच्चा बिना घर में बताये अपने नाम तक बदल ले उसके साहस की गणना पाठक स्वयं ही कर लें ।

यात्री जी कभी गाड़ी या किसी भी वाहन से गाज़ियाबाद की सड़कों पर न चले । साहित्य के इस सच्चे, अनथक यात्री ने पैदल अपने क़दमों से ही गाज़ियाबाद की सड़कें नाप दीं । वरिष्ठ साहित्यकार डॉ जयप्रकाश धूमकेतु जी इनके पैदल यात्रा को जैसे स्केच करते हुए कहते हैं कि सड़क पर जब ये चलते थे तो इनके झोले में किताबों के साथ-साथ रोटियां भी रहती थीं । जो ये सड़क के कुत्तों को खिलाते चलते थे । ऐसे में इनकी पैदल मंडली में श्वान दल स्वयं ही शामिल हो जाता था । ऐसे मानवीयता के साक्षात् बिम्ब थे से रा यात्री जी ।

वर्तमान साहित्य पत्रिका के सम्पादक के रूप में इन्होने संपादकीय जीवन के साथ भी अपने परिश्रम के द्वारा न्याय किया । अपने मित्रों व परिचितों के हर सुख-दुःख में ये अवश्य जाते थे। और अंत में इसे हिंदी साहित्य जगत का दुर्भाग्य ही कहें कि प्रेमचन्द से लेकर मुक्तिबोध तक के जीवन के अंत के समय जैसे शायद उनका अपना रचना संसार ही उन्हें भूल सा गया । वही यात्री जी के साथ भी हुआ । ये लम्बी बीमारी से जूझते रहे और समकालीन साहित्यकार अपनी दुनिया में मस्त बने रहे ।

पर साहित्य और मानवता के इस अद्वितीय यात्री ने इतना लम्बा और शानदार मार्ग बना दिया है कि आने वाले समय में साहित्य के पथिक इस राह पर स्वयं को कभी अकेला नहीं पाएंगे, सड़क हो, जीवन हो, रचनाधर्मिता हो हर जगह से. रा. यात्री जी एक सहयात्री बनकर उस पथिक के साथ चलते रहेंगे ।

संविधान दिवस

हर नागरिक के स्वालंबन और स्वाभिमान का दस्तावेज है संविधान

मनोज कुमार सिंह
लेखक/साहित्यकार/उप-सम्पादक
कर्मश्री मासिक पत्रिका

किसी भी देश का संविधान उस के शासकों , प्रशासकों, न्यायविदों, राजनेताओं, जनप्रतिनिधियों, वकीलों, बुद्धिजीवियों और जिम्मेदार नागरिकों के लिए सर्वोत्तम पथ प्रदर्शक दस्तावेज होता है। संविधान के आलोक में ही किसी भी राष्ट्र का राष्ट्रीय जीवन और राष्ट्र में रहने वाले नागरिकों का जन जीवन सजता- संवरता, मर्यादित, विकसित और अनुशासित होता है।

आधुनिक काल में वैसे तो अलिखित संविधान के रूप में सबसे पुराना संविधान ग्रेट ब्रिटेन का संविधान हैं, जो अभिसमयों और संवैधानिक परम्पराओँ पर आधारित है, परन्तु लिखित संविधान की परम्परा का आरम्भ संयुक्त राज्य अमरीका से माना जाता हैं। संयुक्त राज्य अमरीका की तर्ज़ पर आस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड , फ्रांस, कनाडा,जर्मनी सहित अन्य यूरोपीय देशों का संविधान लिखा गया। इसी परम्परा में सत्ता हस्तांतरण के संक्रमण कालीन दौर में भारतीय संविधान का लेखन कार्य आरंभ हुआ।

हमारे दूरदर्शी महान स्वाधीनता संग्राम सेनानियों के सुनहरे सपनों को साकार करने के लिए संकल्प पत्र के रूप में भारत का संविधान 26 नवम्बर 1949 को पूर्ण रूप से बनकर तैयार हुआ था और इसी दिन हमारे संविधान सभा के समस्त महान मनीषियों ने इस पर हस्ताक्षर कर इसे भारत की जनता की तरफ से अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया था। लम्बे संघर्ष की यातनापूर्ण अनुभूतियों को हृदय में सहेजे-समेटे हमारे संविधान निर्माताओं ने दो वर्ष, ग्यारह महीने और अट्ठारह दिन यानि लगभग तीन वर्ष तक लम्बे विचार विमर्श, व्यापक बहस और मैराथन के उपरांत भारतीय संविधान को तैयार किया। 26 नवम्बर 1949 को निर्मित हमारे पवित्र संविधान को हमारे विद्वान संविधानविदों ने ठीक दो महीने बाद 26 जनवरी को लागू करने का निश्चय किया। क्योंकि 26 जनवरी 1930 को रावी नदी के तट पर ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन में की गई पूर्ण स्वराज्य की ऐतिहासिक घोषणा की महत्ता को भारतीयो में जीवंत रखा जा सके। इसी ऐतिहासिक घोषणा के अनुसार 1930 से 1947 तक हर साल 26 जनवरी को भारतवासी स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाते आ रहे थे। इस ऐतिहासिक और महान परंपरा को जीवंत रखने के लिए भारतीय संविधान को 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया।

डॉ राजेंद्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरु, बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर,सरदार बल्लभ भाई पटेल , मौलाना,अबुल कलाम आज़ाद और पंडित अलगू राय शास्त्री जैसे 389 संविधानविदो ने मिलकर जो संविधान बनाया उसमें लगभग दो सौ वर्षों तक ब्रिट्रिश सरकार के दौरान हमारे स्वाधीनता संग्राम सेनानियों द्वारा भोगी गई यातनापूर्ण संघर्ष की अनुभूतिओ की झलक साफ-साफ दिखाई देती है। विश्व कप के सबसे विशाल , अद्वितीय और अनूठे संविधान में भारतीय समाज में व्याप्त, विविधताओं, विषमताओं और अंतर्विरोधों में सामंजस्य स्थापित करने की अद्भुत क्षमता है। जिस तरह चौदह वर्षीय वनवासी जीवन की अनुभूतियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जनता की आशाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप एक आदर्श राज्य जिसे भारतीय वांगमय में रामराज्य कहा जाता है स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। उसी तरह हमारे स्वाधीनता संग्राम सेनानियों ने अपनी यातनापूर्ण अनुभूतियों से प्रेरित होकर भारतीय संविधान को एक ऐसा दस्तावेज बनाया जिसके प्रकाश में भारत को एक आदर्श , नैतिक और मानवतावादी मूल्यों से लबरेज, लोकतांत्रिक और कल्याणकारी राज्य बनाया जा सके।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना तथा संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों तथा नीति निदेशक तत्वों से एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, कल्याणकारी राज्य निर्मित करने की संकल्पना अभिव्यंजित होती हैं। यह तथ्य भी सर्वविदित है कि-हमारा महान और विशाल संविधान एक झटके में नहीं तैयार हो गया और न ही किसी देवलोक से हुई किसी आकाशवाणी के फलस्वरूप लिपिबद्ध हो गया बल्कि उस समय के सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वाधिक प्रखर संवैधानिक चेतना से लैस, तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर गहरी और व्यापक समझ रखने वाले प्रज्ञावान, कुशाग्र, अत्यंत मेधाशक्ति सम्पन्न मनीषियों के मध्य लम्बे और धारदार बहसों के फलस्वरूप संविधान की प्रत्येक इबारत लिखी गई।

हमारे संविधान की प्रस्तावना में ही सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय स्थापित करते हुए हर नागरिक को गरिमामय जीवन सुनिश्चित करना प्रत्येक सरकार का दायित्व बताया गया है । एम वी पायली सहित अन्य राजनीतिक चिंतको के अनुसार प्रस्तावना, भारतीय संविधान की आत्मा है क्योंकि- प्रस्तावना में सरकार और नागरिकों को मार्गदर्शित करने वाले मूल्य, मान्यताऐ,आदर्श और सिद्धांत अंतर्निहित है। विगत पचहत्तर वर्षों के शासन के दौरान हम प्रस्तावना में वर्णित अभिव्यक्ति, धर्म, उपासना और विश्वास की स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को स्थापित करने में कुछ हद तक सफल रहे। परन्तु कभी-कभी होने वाले साम्प्रदायिक दंगे, जातिगत हिंसा और माब लिचिंग की घटनाए अभिव्यक्ति, धर्म , उपासना और विश्वास की स्वतंत्रता पर ग्रहण लगाते हैं। अभी हाल ही में एक वर्ष तक चलें शांतिपूर्ण अहिंसात्मक किसान आन्दोलन के आगे भारत सरकार का जन भावनाओ का सम्मान करते कदम वापस लेना और प्रधानमंत्री द्वारा क्षमा याचना करते हुए तीनों कृषि कानूनों को वापस लेना हमारी मजबूत लोकतंत्रात्मक व्यवस्था की सफलता की पुष्टि करता है।

अपने पड़ोसी देशो के साथ हम तुलनात्मक विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि- भारतीय संविधान की भूल भावना के अनुरूप हम एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने में अपेक्षाकृत सफल रहे हैं।

भारतीय संविधान में पुलिसिया राज्य के विरुद्ध एक कल्याणकारी राज्य बनाने का संकल्प दिग्दर्शित होता है परन्तु पचहत्तर वर्षों के शासन के बाद भी हम एक आदर्श कल्याणकारी राज्य स्थापित करने में असफल रहे है। हमारे देश के नीति निर्माताओं द्वारा नीति निदेशक तत्वों की अवहेलना, शासन सत्ता पर पूंजीवादी प्रभाव और भावनात्मक राजनीति के बढते चलन-कलन के कारण भारत एक आदर्श कल्याणकारी राज्य के रूप में परिवर्तित नहीं हो पाया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 मे स्पष्ट रूप से कहा गया है कि-"प्रत्येक भारतीय नागरिक को जिन्दा रहने का अधिकार है (every Indian citizen has right to alive)"। परन्तु यह सर्वविदित तथ्य है कि जिविकोपार्जन के साधनों के अभाव में जिन्दा रहने का अधिकार महज कागजी है। प्रकारांतर से काम के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाये बिना कोई भी राज्य अपने नागरिकों को जिन्दा रहने का अधिकार देने का वादा नहीं कर सकता है। पचहत्तर वर्षों के शासन के बाद भी हम काम के अधिकार को मौलिक अधिकार नहीं बना पाए। जबकि नीति निदेशक तत्वों से संबंधित अनुच्छेद 41 मे नागरिकों को कुछ दशाओं में काम, शिक्षा और लोक सहायता पाने का अधिकार दिया गया है।

स्वाधीनता उपरांत भारत को कल्याणकारी राज्य बनाने की दिशा में कुछ सार्थक प्रयास किया गया जैसे- भूभि सुधार कानून, जमींदारी उन्मूलन कानून, कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम और बैंको का राष्ट्रीयकरण इत्यादि। इन समस्त कानूनों के तहत आर्थिक और सामाजिक समानता लाने का प्रयास किया गया। जन कल्याणकारी राज्य बनाने की दिशा में नीति निदेशक तत्व विधायिका और कार्यपालिका के लिए निर्देश हैं। नीति निदेशक तत्वों में स्पष्ट कहा गया है कि राज्य आर्थिक क्षेत्र में एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करेगा और एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करेगा जिससे देश की धन-दौलत अधिकतम लोगों तक वितरित हो सके। कल्याणकारी राज्य की दिशा में सर्वाधिक सशक्त भूमिका पंचवर्षीय योजनाओं ने निभाया। समग्र और संतुलित विकास को ध्यान में रखकर संचालित की गई पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने में काफी तक सफलता प्राप्त हुई। परन्तु आज फिर देश में आर्थिक संकेन्द्रण की प्रवृत्तियां बढ रही हैं। यह भारत जैसे कल्याणकारी राज्य के लिए शुभ संकेत नहीं है। बैंको के राष्ट्रीयकरण ने भी जनकल्याणकारी योजनाएं बनाने में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया। एक स्वस्थ्य और गतिशील लोकतंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इस दिशा में तिहत्तरवें और चौहत्तरवें संविधान संशोधन द्वारा ग्राम पंचायतों और नगर पंचायतो को संवैधानिक दर्जा देना एक ऐतिहासिक कदम था।

अंततः अभी भी आर्थिक असमानता को कम करने की दिशा निर्णायक नीतियां बनाने की आवश्यकता है। 2010 में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार की श्रेणी में शामिल कर लिया गया परन्तु व्यवहारिकता के धरातल पर आम आदमी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। आवश्यक वस्तुओं के दाम बढने से लोग फिर गरीबी रेखा के नीचे आते जा रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सरकारों द्वारा अत्यधिक संरक्षण देने के कारण भारत के देशज परम्परागत और लघु कुटीर उद्योगो पर खतरा मंडराने लगा है। देशज परम्परागत लघु कुटीर उद्योग आर्थिक विकेन्द्रीकरण के सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। इसलिए इनका संरक्षण और संवर्धन आवश्यक है। आज फिर से हमें संविधानविदो के सुनहरे सपनों को स्मरण करते हुए संकल्पित और समर्पित भाव से अपने सामाजिक और नागरिक दायित्वों का पालन करना होगा। हमारा संविधान अपने देश के शासकों, प्रशासकों, न्यायविदों, राजनेताओं, जनप्रतिनिधिओं, विद्वानों, विचारकों और समस्त नागरिकों के लिए आइना की तरह है। संविधान रूपी आइने के आलोक में जैसे-जैसे हम स्वयं को सजाते, संवारते और अनुशासित करते जाते हैं वैसे -वैसे हमारा नागरिक जन जीवन और राष्ट्रीय जीवन सजता-संवरता और अनुशासित होता जाता हैं।

बैरिस्टर मो. क. गाँधी

महात्मा गाँधी का अधिवक्ता जीवन और उसके अनुभव

एड.सत्यप्रकाश सिंह

पूर्व अध्यक्ष, डिस्ट्रिक्ट बार एसो.

मऊ

विश्व राजनीतिक क्षितिज के महान व्यक्तित्व महात्मा गाँधी ने समसामयिक राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक ही नहीं अपितु व्यक्तिगत आस्था एवं विश्वास को भी प्रभावित किया । उनके चमत्कारिक सत्य व अहिंसा के प्रयोग ने साम्राज्यवादी संसार में उपनिवेशों की शासित जनता को एक अभिनव व अदभुत शस्त्र प्रदान किया । महात्मा गाँधी के महान व्यक्तित्व से लोकतान्त्रिक युग की संसद, कार्यपालिका व न्याय-व्यवस्था ही नहीं साहित्य व पत्रकारिता भी प्रभावित हुई । महात्मा गाँधी ने यह नानाविध प्रयोग प्रारम्भिक तौर से एक अधिवक्ता के रूप में इंग्लैंड से 1891 ई. में बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत भारत व दक्षिण अफ्रीका में विधिक कर्म करते हुए किया ।

ग्रेट ब्रिटेन में रोमन एवं कॉमन विधि का अध्ययन करने के उपरांत महात्मा गाँधी ने परिश्रम व अध्ययन से तत्कालीन भारतीय कानून का अध्ययन किया । इन्होने अपने विधिक कार्य का आरम्भ बॉम्बे हाईकोर्ट में किया। इन्हें अपना पहला केस ममीबाई का मिला, जीवन में अपने परिश्रम से प्राप्त फीस के रूप में मिले 30 रूपये के आत्मिक सुख का अनुभव मिला । मुक़दमा दिलाने वाले दलाल ने महात्मा गाँधी को कनिष्ठ अधिवक्ता समझ विट्ठलभाई पटेल को इन्हें अपने साथ रखने को ही नही कहा बल्कि प्रदान फीस भी वापस ले ली । यही दशा आज भी वर्तमान न्यायिक व्यवस्था में विधिक कर्म में लगे कनिष्ठ अधिवक्तागणों की है । उनकी प्रतिभा का आकलन मात्र इसलिए नहीं हो पाता है कि उन्होंने कोई नाम नहीं कमाया है ।

परिश्रमी मोहनदास करमचन्द गाँधी ने अपने दुसरे केस का वादपत्र ही नहीं तैयार किया बल्कि अपने वरिष्ठ व कनिष्ठ साथियों से विचार-विमर्श किया तो उन्हें बड़ा प्रोत्साहन मिला और उन्होंने इस मुकदमे में जीत भी हासिल की । बॉम्बे हाईकोर्ट के प्रारम्भिक दिनों में ही विधिक वादपत्र तैयार कर प्रस्तुत करने की महारत से गाँधी जी ने एक अच्छा मुकाम हासिल कर लिया । वे साथ ही साथ राजकोट व गिरगांव के मूल न्यायालय भी जाते रहे जहाँ उन्हें अच्छी आय होती थी। राजकोट में उन्होंने ऑफिस खोला, यहाँ वकालत की अच्छी स्थिति थी, करीब 300 से 500 रुपये की मासिक आय भी होने लगी । अपने भाई के अनुरोध पर उन्होंने राजकोट में नियुक्त एक ब्रिटिश अधिकारी जिनका एक प्रकरण था, उनका अनिच्छापूर्वक पत्र लिखा व उनसे मिले ।उसने गाँधी जी के साथ दुर्व्यवहार किया । उस अधिकारी के विरुद्ध गाँधी जी ने गवर्नर को पत्र लिखा तथा बम्बई हाई कोर्ट के प्रतिष्ठित वकील फिरोजशाह मेहता से इस विषय पर बातचीत की ।

फिरोजशाह मेहता ने गाँधी जी को सलाह दी कि यदि तुम्हे वकालत करनी है तो अधिकारी के विरुद्ध लिखा शिकायत पत्र फाड़ डालो तथा अपमान को पी जाओ । इस घटना को गाँधी जी ने गंभीरता से लिया तथा अपने समस्त अधिवक्ता कर्म में किसी के व्यक्तिगत मामले में पत्र नहीं लिखा । राजकोट में वकालत के दौरान गाँधी के बड़े भाई के मित्र अब्दुल्ला मेमन का पत्र आया कि मेरा कारोबार द.अफ्रीका में है । जहाँ मेरा मुकदमा वहां की अदालत में चल रहा है । हमारे लिए केस अपने वकील को समझा पाना कठिन है । तुम्हारा भाई बैरिस्टर है, वह हमारा केस हमारे वकील को समझा देगा । मेरा भाई अब्दुल करीम इसमें उसकी मदद करेगा । मैं आने-जाने रुकने का वांछित पराश्रमिक दूंगा । सन 1893 ई. में गाँधी जी भारत छोड़ नेटाल रवाना हो गये ।

ब्रिटिश उपनिवेश में हिन्दोस्तान से जबरदस्ती ले जाये जाने वाले या स्वयं जाने वाले आम हिन्दुस्तानी की क्या इज्जत है, इसका अनुभव गाँधी जी को जहाज की यात्रा के दौरान ही हो गया । गाँधी जी ने डरबन के अधिवक्ता एसोसिएशन में बड़ी कठिनाई से पंजीकरण कराया, यहीं पर इन्हें रंगभेद की प्रथा का अनुभव हुआ । गाँधी जी जब अदालत में अब्दुल्ला के वकील के पास बैठे तब मजिस्ट्रेट इन्हें घूरने लगा तथा उसने इनसे पगड़ी उतारने को कहा, गाँधी जी ने अब्दुल्ला को देखा तथा अदालत छोड़ दी । यहीं गाँधी ने अनुभव किया की यहाँ तीन प्रकार के हिन्दुस्तानी हैं, कुछ अपने को अरबी कहते हैं, कुछ स्वयं को गुजराती मेहता या समय पड़ने पर अरबी कहते हैं, तीसरे श्रमिक या उत्तर भारतीय हैं जिन्हें कुली या सामी कह कर अंग्रेज़ पुकारते हैं । गाँधी जी कुली बैरिस्टर कहलाये । ये कुली ही गिरमिटिया मजदूर थे ।

श्री अब्दुल्ला सेठ का केस उनके रिश्तेदार, प्रिटोरिया के प्रतिष्ठित व्यापारी हाजी तैय्यब खान से था । यह 40000 पौंड का विवाद था जिसका कारण व्यापार में आपसी अविश्वास था ।

आम क़ानूनी मसलों से अलग यह केस हिसाब किताब से सम्बन्धित था, अतः इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए गाँधी जी ने एकाउंटेंसी का ज्ञान हासिल किया । गाँधी जी ने पगड़ी विवाद पर वहां के अख़बारों में लिखा था जिसके कारण पहले ही द.अफ्रीका में इन्हें पहचान मिल चुकी थी । इस मुकदमे के लिए प्रिटोरिया यात्रा के दौरान मेरिनबर्ग स्टेशन पर अश्वेत होने के कारण एक अंग्रेज़ की शिकायत पर फर्स्ट क्लास का टिकट होने के बावजूद गार्ड व अधिकारीयों ने गाँधी जी को ट्रेन के अंतिम डिब्बे में जाकर बैठने की सलाह दी । गाँधी ने इससे इंकार कर दिया । पुलिस ने इन्हें धक्के देकर रात्रि में प्लेटफार्म पर उतार दिया गया । इस अपमान की स्थिति में गाँधी के मन में अनेक प्रकार के विचार आने लगे । या तो वे केस छोड़कर वापस चले जायें, या अपमान सहकर दूसरी ट्रेन से प्रिटोरिया जायें या इस रंगभेद के खिलाफ अपने अधिकार के लिए लड़ें । गाँधी जी ने सुबह इसकी शिकायत जनरल मैनेजर से की तथा उनके वादकारी को सूचना दी । उसने स्टेशन मास्टर से सम्मान के साथ इन्हें प्रिटोरिया भेजने के लिए कहा। गाँधी जी दुसरे दिन चार्ल्स टाउन ट्रेन से पहुंचे जहाँ से प्रिटोरिया जाना था । चार्ल्स टाउन से जोहान्सबर्ग घोड़ागाड़ी “सिराम” की यात्रा करनी पड़ती थी । उसका चालक कुली जैसे दिखने वाले को अंदर नहीं बैठाना चाहता था । वह मुझे गोरों के साथ नहीं बैठाना चाहता था । उसने मुझे चालक के साथ बैठने को कहा क्योंकि मैं कुली था ।यह मुझे अपमानजनक व अन्यायपूर्ण लगा । करीब 3 बजे गोरे अधिकारी ने गाँधी जी को अपने पैरों के पास बैठने को कहा, यह गाँधी जी को नितांत अपमानजनक लगा । गोरे ने गाँधी जी द्वारा प्रतिकार करने पर इनके ऊपर तमाचों की बरसात कर दी । इन्हें सिराम से नीचे घसीटा, गाली देने लगा । उसमे बैठे अन्य लोगों को दया आयी, उन्होंने कहा कि इसे यहाँ बैठने दो, नाहक न मारो, दूसरी ओर अटेंडेंट था, वह उसे पैरों के पास बैठाकर बैठा।

वह लगातार आँखें तरेर रहा था तथा गाली दे रहा था । गाँधी जी गन्तव्य तक पहुँचने तक प्रभु की प्रार्थना करते रहे । रात को सिराम स्टेंटर्न पहुंचा वहां ईसा सेठ व अन्य व्यापारी आये, इन हिन्दुस्तानियों ने उन्हें अपनी आपबीती बतायी । गाँधी जी ने सिराम कम्पनी के सार्जेंट को पत्र लिखा। उसने गाँधी जी को आश्वस्त किया कि आपको जगह मिलेगी । ये उस रात जोहान्सबर्ग पहुंचे वहां मोहम्मद कमरुद्दीन इन्हें लेने आया था । इन्होने होटल में रहने का निश्चय किया परन्तु होटल के मैनेजर ने कमरा देने से इन्कार कर दिया । वहां अब्दुलमनी सेठ ने बताया कि यहाँ हमें होटल में कौन रहने देता है । उन्होंने वहां का अन्यायी इतिहास बताते हुए कहा हम प्रथम व द्वितीय दर्जे में चलने की सोच भी नहीं सकते ।

गाँधी जी ने उसके बावजूद प्रथम दर्जे में चलने का निश्चय किया । वहां का स्टेशन मास्टर ट्रांसवाल या होलैंड का था उसने इन्हें वस्तुस्थिति बतायी । ट्रेन आयी व गाँधी जी प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे जहाँ एक अन्य गोरे सज्जन बैठे हुए थे । जब गार्ड टिकट देखने आया तो वह गाँधी जी को देखते ही चिढ गया । तथा गाँधी जी को तीसरे दर्जे में जाने का आदेश दिया । गोरे सज्जन ने गार्ड को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि देखते नहीं इनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट है, मुझे तो कोई कष्ट नहीं है । उसे हटाते हुए गाँधी जी को आराम से बैठने को कहा प्रिटोरिया स्टेशन पर वकील का कोई व्यक्ति गाँधी जी को लेने नहीं आया, यह सोच कर कि अब होटल वाला तो नही ही ठहराएगा गाँधी जी ने स्टेशन पर रुकने का निश्चय किया । टिकट कलेक्टर से जानकारी लेनी चाही पर उसने भी अपेक्षित मदद नहीं की । वहां उपस्थित अमेरिकी हब्शी सज्जन ने गाँधी जी की मदद की, वे इनको एक अमेरिकन होटल ले गये ।वहां का मैनेजर राजी हुआ पर उसने शर्त यह रखी कि गाँधी जी कमरे के बाहर नहीं आयेंगे । जिससे उसके गोरे ग्राहक छिटकने का नुकसान न होगा । उसने अपने ग्राहकों से बातचीत की, उन्होंने कहा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है जिसके कारण गाँधी जी को भोजनालय में जाने अवसर मिला । सुबह वकील ए. डब्ल्यू वेकर गाँधी जी से मिले । उनका केस लम्बा व उलझा हुआ था । उन्होंने गाँधी जी से कहा कि वे बस उनसे मुकदमे की वास्तविकता समझने का काम लेंगे । उन्होंने गाँधी जी से अपने वादकारी से पत्र व्यवहार कर केस समझने व इन्हें बताने को कहा । मिस्टर वेकर गाँधी जी को भटियारे स्त्री के घर ले गये, उसने इन्हें रखना मंजूर कर लिया । गाँधी जी होटल छोड़कर इस स्त्री के घर आ गये । वेकर ईसाई धर्मावलम्बी थे । उनके साथ गाँधी जी को प्रार्थना सभा में कोट्स आदि लोगों से मिले । गाँधी जी ने हफ्ते भर में तैय्यब जी से परिचय कर लिया जी प्रिटोरिया के प्रतिष्ठित व्यापारी थे । गाँधी जी ने उन्हें अपना मन्तव्य बताया व कहा कि व्यापार में सत्य का अनुसरण करने से हिदुस्तानी जन को प्रतिष्ठा मिलेगी । गाँधी जी ने ट्रांसवाल, प्रिटोरिया व ऑरेंज फ्री स्टेट के हिदुस्तानी जन की दशा का अध्ययन किया । ऑरेंज फ्री स्टेट 1888 में कुली कानून बना जिसमे एक इंसान के रूप में मिले सारे अधिकार छीन लिए गये थे । एक कानून तो ऐसा था जिसमें हिन्दुस्तानी फुटपाथ पर चल भी नहीं सकते थे । रात में परमिट लेकर चलना होता था । कोटस देर रात में दस बजे जाते थे । गाँधी जी को कोई बाधा न हो अतः वह इन्हें सरकारी वकील क्राऊजे के पास ले गये । क्राउजे महोदय को यह अपमानजनक लगा कि एक वकील भी ब्रिटिश प्रजा हो कर परमिट लेकर चले । उन्होंने स्वयम गाँधी जी को परवाने के बदले पत्र जारी कर दिया । गाँधी जी इस पत्र से फ्री स्टेट में कहीं भी जा सकते थे । क्राउजे के भाई जोहन्सबर्ग में पब्लिक प्रोसेक्युटर नियुक्त हुए । इन सम्बन्धों से सार्वजनिक कार्यों में गाँधी जी को काफी मदद मिली ।

यहीं पर एक घटना घटी। घर जाते समय गाँधी जी को प्रेसिडेंट स्ट्रीट से होकर खुले मैदान से जाना होता था जहाँ पर सिपाही पहरा देते थे। गाँधी जी एक दिन जा रहे थे कि सिपाही ने इन्हें धक्का मारा, सौभाग्य से ठीक उसी समय कोटस वहां से जा रहे थे उन्होंने गाँधी जी से कहा कि इस सिपाही पर मुक़दमा करो, गवाही मैं स्वयं दूंगा। गाँधी जी ने तय कर लिया था चाहे जो कष्ट उठाना पड़े वे अन्याय करने वाले पर मुकदमा नहीं करेंगे। उस सिपाही ने गाँधी जी से माफ़ी मांगी। इस केस को देखने के दौरान उन्होंने अफ्रीका में देखा कि कैसे यह हिन्दुस्तानी लोगों के रहने के लायक नहीं है।
प्रिटोरिया में इस केस को देखते हुए गाँधी जी को सार्वजनिक कार्य कराने की अपनी क्षमता का पता लगा।तथा इन्होने सच्ची वकालत सीखी। गाँधी जी ने अपने वादकारी के मुकदमे को देखा तो मालूम पड़ा कि उनका केस मजबूत है, दोनों पक्ष के वकील न जाने कब तक लड़ेंगे। गाँधी जी ने तैय्यब जी से आपस में मामला तय करने हेतु समझाया। इनके समझाने से दोनों रिश्तेदार समझौता करने को राजी हुआ, पंच नियुक्त हुए और सारी रकम एक बार में देने के दशा न थी ऐसे में देने हेतु एक लम्बा समय तय हुआ। दोनों का मान सम्मान बढ़ा। वकील का कर्तव्य दरारों को मिटाने का है। इस केस के बाद गाँधी जी ने अपने ऑफिस में बैठकर सैकड़ों मामले निपटवाए।

आमों की टोकरी

उत्तराखंड की आत्मा गीता कैरोला

उत्तराखंड की आत्मा गीता कैरोला जी प्रसिद्ध लेखिका, कवियित्री एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं. आप महिला समाख्या उत्तराखंड की भूतपूर्व निदेशक रह चूकी हैं.

बसंत गुजरे बस चंन्द रोज बाद गुनगुनी धुप का मजा ले रही थी, तभी सामने आम के पेड़ पर नजर थम गयी। ओह आम बौरा गए। और बस मन भी बौराने लगा। बरामदे की रेलिंग पर गुनगुनी बासंती धूप में सिर टिकाये बौराया मन अतीत वर्तमान के जाने किन-किन कोनो में भटकने लगा। अचानक पहले मन हंसा और हंसी की कनकियां होंठो में फ़ैल गयी।

हमारे गांव में आम का कुल जमा एक ही पेड़ था,मोटे तने वाला,छतनार मोटी मोटी टहनियों से भरा विशाल पेड़। वो पेड़ भी दूर खेतों के किनारे था। यानि हम बच्चों के लिए मृगतृष्णा जैसा।उसमे बौर भी खूब लगती,आम छोटे छोटे चूसने वाले लगते। जिस दिन वारिश आंधी आती,दूसरी सुबह सारे गांव के बच्चे पेड़ के नीचे दिखाई देते।बड़ी लड़ाई झगडे के बाद एक आध अमियाँ हाथ लगती।और वो घर आते आते आधी तो चट हो जाती। दादा जी हमेशा कहा करते थे कि आम और पीपल के पेड़ में देवता बास करते है इसी लिए दोनों पेड़ों की सरासू गांव चारों तरफ से आम के पेड़ों से घिरा था। जहाँ पर उनका पानी का धारा था वहां पर ढेर सारे आम के पेड़ों का पूरा झुरमुट था। ये आम जरूर किसी ने लगाये होंगे पर इन पर किसी का मालिकाना हक़ नहीं था। सरासू के सारे परिवारों के अलावा आस-पास के जितने भी गांव थे सब आम के मौसम में आम टीपने सरासू जाते। जिनकी रिश्तेदारी होती उन्हें समलोण(याद या गिफ्ट) के तौर पर आम की कंडिया भेजी जाती।

हमारे गांव के बच्चे भी आम पकने के मौसम में आम टीपने सरासू जाते। मेरे लिए ये आम चूसने के स्वाद के अलावा घुमक्कडी का भी मौका था,पर दादा जी कभी नहीं जाने देते।वो हमारे लिए पाटीसैण(जो हमारा बाजार था)या कोटद्वार से ढेर सारे आम खरीद लाते।

पर दादा जी के लाये इन आमो में वो मजा कहाँ था जो मेरी आवारागर्दी से से लाये आमों में होता। उन्होंने मुझे बहुत समझाया,मनाया पर मै तो मै थी।दुसरे गांव जाना और पेड़ो में चढ़ कर टहनियां हिला हिला कर आम तोडना वाह क्या मजा आएगा।

मैंने रात को दादी से चोरी-चोरी चुपके से ढक्कन वाली कंडी निकाल कर ओबरे(गोठ) में छुपा दी। दुसरे दिन दादा जी की नजर बचा के कंडी उठाई और अपनी सहेलियों के साथ सरासू के लिए दौड़ लगाई। बड़ी दादी कहती ही रह गयीं, “हे ये छोरी कहाँ मर रही है।हे सरू की दादी देख तो”

जब तक कोइ सुनता तब तक तो मैने एक धार पार कर ली थी। जब हम सरासू पंहुचे दोपहर हो गयी थी। मोटे मोटे तनो वाले इतने बड़े ऊँचे पेड़ देख कर मेरे होश फाख्ता हो गए। अब क्या करूँ? साथ आये हुए बड़े लड़के तो जैसे तैसे पेड़ो में

चढ़ गए,पर आम तो दूर पत्तों में छिपे थे।उन्होंने अपने लिए तोड़ना शुरू ही किया कि नीचे से मेरी गुहारें शुरू हो गयी। मै उनको इस आस में पके आम दिखाती वो देखो चार एक साथ।वो देखो पूरा झुम्पा लगा है की मुझे भी देंगे,पर उन्होंने मुझ पर कोइ दया नहीं दिखाई। जो आम जादा पका होता वो वही पेड़ पर टहनियों से टिक कर चूस लेते। भूख के मारे मेरे पेट में मरोड़े उठ रहे थे। उनके गिराये दो चार कचकचे आम खा कर मेरे दांत खट्टे हो रहे थे।

जो उनके हाथ से छूट जाते मै वो कच्चे,अधपके आम बिन कर अपनी टोकरी में डाल देती। उन लड़कों ने मुझे आम नहीं दिए और मेरी टोकरी खाली ही रही अब मुझे दादी की मार याद आने लगी।सोचा था आम की भरी टोकरी देख के वो खुश हो जायेगी पर यहाँ तो उल्टा हो गया।

मैने आस पास की झाड़ियों में टपके आम ढूँढने शुरू किये। रोती जाती और अपने साथियों को खूब गाली देती देती जाती। मेरी दशा देख कर साथियो को दया आ गयी।उन्होंने मिल कर थिंचे,कच्चे, अधकचे आमों से मेरी टोकरी भी भर दी।

हम सब अपनी भरी टोकरी को सर में रख कर अपने गांव के रस्ते चढ़ाई चढ़ने लगे।जब थक जाते तो किसी समतल पत्थर में बैठ जाते। बैठते ही मै टोकरी का ढक्कन खोलती, अँगुलियों से आमो को दबाती ,जो भी थोडा पका होता, उसे दो चार चुस्की मार कर फिर टोकरी में रख देती। घर पहुंचते-पहुँचते मैंने लगभग सारे आम आधे-आधे चूस लिए थे।

अब डरने की बात तो ख़त्म हो गयी थी,टोकरी जो भरी थी। रौब से टोकरी दादी के सामने रख दी।जब तक दादी मेरी धुनाई करने डंडा उठाती मैंने टोकरी का ढक्कन उठा दिया। जैसे ही ढक्कन हटा दादी आमों की हालत देख कर सकते में आ गयी, उसके बाद क्या हुआ बस पूछिये मत।

निर्माण व शिल्प की अद्भुत कथा संजोये

प्राचीन राधा कृष्ण पंच मंदिर

चंद्रेश वर्मा
पाली ग्राम, गाज़ीपुर

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में छोटी सरयू जिसे टोंस नदी के नाम से भी जाना जाता है के किनारे बसे पाली गाँव के ईशान कोण (पूर्व-उत्तर) में नागर शैली में निर्मित दो तल्लों व 4 बीघे की परिधि में बना हुआ शानदार मंदिर है " राधा कृष्ण पंच मन्दिर" ।

इस मन्दिर की सुन्दरता देखते ही बनती है । चारों ओर सुन्दर दीवारें, प्राचीन गहरा कुंआ, दिव्य मुख्य भवन, बगल में ही पुजारी जी के लिए बना एक कमरा, और विशाल प्रांगण । यह मन्दिर गाँव ही नहीं बल्कि आस-पास के कई क्षेत्रों की आस्था का केंद्र है ।

इस मन्दिर के निर्माण को लेकर एक दंतकथा प्रचलित है । गाँव के ही निवासी वयोवृद्ध श्री पारसनाथ जयसवाल जी इस दंतकथा के तथ्य काफी विस्तार से बताते हुए कहते हैं की करीब 250-300 वर्ष पूर्व एक ब्राह्मण को अंग्रेज़ जज ने सजा दी थी । मुकदमे के दौरान जब भी वह गरीब ब्राह्मण कचहरी जाता तो उसकी बछिया उसके पीछे-पीछे जाती थी । वह उसे छोड़ती ही न थी । अतः सजा मिलने के बाद सबको उस बछिया की बड़ी चिंता हुई । बाद में वकीलों ने जज महोदय को गोवंश की रक्षा हेतु उस ब्राह्मण पर दया दिखाने को कहा । जज ने शर्त रखी कि उस ब्राह्मण के वजन के

बराबर मुद्रा कोष में जमा की जाये तो वह उसे छोड़ देंगे । अब क्षेत्र में हल्ला हुआ कि भला इतनी मुद्रा दे कौन ? तब क्षेत्र के बड़े जमींदार श्री शिव मूरत लाल जी उस विशाल मुद्रा को जमा करने गये । जज ने उनकी धर्मनिष्ठता व दया भावना देख कहा कि मैं इस ब्राह्मण को छोड़ देता हूँ, आप ये मुद्रा ले जायें व नेक कामों में लगायें । शिवमूरत जी वहां से चले व जगह-जगह जल-छाँव आदि की व्यवस्था करते हुए वृज बिहारी पोखरे के पास शिवमन्दिर बनवाने लगे । पाली गाँव के लोगों ने कहा की आप हमारे गाँव के हैं सो यहाँ पर मंदिर बनायें । इस पर शिवमूरत जी ने कहा कि पाली में तो ज़मीन नहीं है मेरी । फिर पाली गाँव के ज़मींदारों ने 4 बीघे की ज़मीन मन्दिर निर्माण हेतु दी । उस समय सरयू गाँव के बगल से ही बहती थी । शिवमूरत जी ने तब इस विशाल मंदिर का निर्माण प्रारम्भ किया । नाव द्वारा बड़े-बड़े राजस्थानी पत्थर मंगाए गये । और कारीगरों ने अपनी स्थापत्य कला का शानदार नमूना पेश करते हुए भव्य मन्दिर का निर्माण किया ।

इसके मध्य में कृष्ण-राधा जी व चार कोनो में क्रमशः दुर्गा माँ, शिव जी, गणेश भगवान व सूर्य के मन्दिर हैं । दीवारों पर महीन व करीने से नक्काशी की गयी है । इस मन्दिर में प्रारम्भ में 19 मूर्तियाँ थीं, जिनमे 3 अष्टधातु की मूर्ति थी जो कालांतर में चोरी आदि घटनाओं के कारण खंडित होने पर शासन के अधीन सुरक्षित रख लि गयीं । पहले इस मन्दिर का निर्माण 2 तहों में होना तय हुआ । पर शिवमूरत जी की असमय मृत्यु होने पर उनके भाई स्वर्गीय श्री लक्ष्मण लाल जी ने इसकी स्थापना की ।

मंदिर कई वर्षों तक अनदेखा, अलग-थलग पड़ा रहा । कुछ वर्ष पूर्व अयोध्या के करुणानिधान भवन के संत रामानंदी श्री मुनीन्द्र दास जी महाराज प्रवचन हेतु गाँव के समीप आये ।उन्हें जब इतने महान व दिव्य मन्दिर की जीर्ण-शीर्ण स्थिति के बारे में पता चला तो वह यहीं रह गये । अपने परिश्रम व अतुलनीय साधना से महाराज जी ने इस मन्दिर को आज अत्यंत सुंदर रूप दे दिया है । उनकी इस दिव्य साधना में स्थानीय ग्रामीण अपनी शक्ति भर सहायता करते हैं ।

उम्मीद है किसी दिन शासन-प्रशासन की नज़र महाराज जी की साधना पर पड़ेगी और मन्दिर पुनः अपने दिव्य गौरव को प्राप्त करेगा ।

Благодарность

मि खा ई ल ले में तो व

ब्ला ग दा र न स्त

मिखाईल लेर्मेंतोव रूस के महान स्वछंदतावादी कवि हैं, इनका जन्म 3 अक्टूबर 1814 को तथा मृत्यु 15 जुलाई 1841 को हुई । रूसी साहित्य में कविता व गद्य दोनों पर इनका स्पष्ट प्रभाव आज भी देखा जा सकता है । इन्होंने रूस में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की नीव रखी थी । ब्लागदारनस्त (Благодарность) इनकी प्रसिद्ध कविता है, जिसका हिंदी अनुवाद सामने है -

За все, за все тебя благодарю я:
За тайные мучения страстей,
За горечь слез, отраву поцелуя,
За месть врагов и клевету друзей;
За жар души, растраченный в пустыне,
За все, чем я обманут в жизни был...
Устрой лишь так, чтобы тебя отныне
Недолго я еще благодарил.Стихотворение

अनुवादक - डॉ शशि कुमार
रुसी भाषाविद

अनुवाद :-

सब कुछ के लिए मैं आभारी हूँ
जुनून में छिपे हुए परेशानियों के लिए
आंसुओं के कड़वाहट के लिए, विष को चुमते हुए भी
दुश्मनों के बदलों और दोस्तों के तानों के लिए भी
आत्मा में जलती आग जो मरूस्थलों में बरबाद हो गयी
सब कुछ के लिए, यहाँ तक की ज़िन्दगी में छलावों के लिए भी
अब इतना आभारी हूँ की समय भी कम है
आभार व्यक्त करने के लिए .

भूटान यात्रा : संस्मरण

डॉ नमिता राकेश
वरिष्ठ साहित्यकार एवं राजपत्रित अधिकारी

भूटान यात्रा का कार्यक्रम बस यूं ही बन गया। कुछ मित्रों ने सूचित किया और बस हां कर दी क्योकि जाने वालों में कुछ जाने पहचाने लोग थे और सबसे बड़ी बात यह कि आयोजक बहुत पुराने पारिवारिक परिचित थे। सबके ज़ोर देने पर मैं भी तैयार हो गई भूटान जाने के लिए।

बस जैसा कि चलन है जो लोग जाने के इच्छुक थे उनको सदस्य बना कर व्हाट्सप्प ग्रुप बन गया और भूटान सम्बन्धी सारी जानकारियां और समय-समय पर सारी सूचनाएं साझा की जाती रहीं। अभी चार महीने थे जाने में लेकिन जोश सबमें ख़ूब था। व्हाट्सप्प ग्रुप बनने से यह पता चला कि इनमें से बहुत लोग परिचित निकले। लगभग सभी किसी ना किसी फन में माहिर। कुछ नए कुछ पुराने। कुछ साहित्यकार, कुछ गायक, अभिनय क्षेत्र के माहिर, कुछ नर्तक, कोई बांसुरी वादक तो कोई कवि-कवियत्री। मेरे जैसी तो हर क्षेत्र में कुछ ना कुछ दखल रखती थी तो मैने आयोजक पर ही छोड़ दिया कि मुझे जहां ज़्यादा फिट समझो उसी में जोड़ दो।

हमारे आयोजक श्रीमान किशोर जी तो हरफनमौला थे ही। हर किसी की जिज्ञासाओं का अपने ही अंदाज़ में जवाब देते। लोगों के प्रश्न भी कभी-कभी अजीब से होते थे जिनको पढ़ कर लगता था कि बेचारे लगता है कभी घर से बाहर ही नहीं निकले या फिर उनके फोन में गूगल जी नदारद हैं। कपड़े क्या ले जाएं, खाना-पीना क्या मिलेगा, मौसम कैसा होगा, करेंसी क्या होगी, क्या-क्या खरीद सकते हैं इत्यादि-इत्यादि। उफ्फ, मुझे लगने लगा कि इन "बड़े बच्चों" के साथ जाने में क्या मज़ा आएगा। कौन इन बच्चों को संभालेगा। पर अब क्या हो सकता था। टिकट बुक हो चुकी थी। सारे दूसरे इंतज़ाम के लिए भुगतान किया जा चुका था। सो जाना तो था ही। वैसे किशोर जी इन सब बेतुके प्रश्नों के उत्तर अपने ही अंदाज़ में देते थे जिन्हें पढ़ कर बड़ा मज़ा आता था।

टूर ऑपरेटर भूटानी महिला थी । उसे भी ग्रुप में जोड़ा गया था ताकि लोग सीधे उसी से अपने प्रश्न पूछ सकें पर उसे हिंदी पढ़नी नहीं आती थी इसलिए अंग्रेज़ी में लिखना पड़ता था। जब पेमेंट की बारी आई तो कइयों के सामने बड़ी समस्या आई। कुछेक को ऑनलाइन पेमेंट करना नहीं आता था वो भी भूटान में क्योकि आयोजक ने सबको बोला कि सीधे टूर ऑपरेटर के खाते में भुगतान करो। कई दिन तक ना जाने कितने प्रश्न और जिज्ञासाएं और उस से ऊपर डर। ख़ैर साहब, कुछ दिनों की मशक्कत के बाद सबने भुगतान कर ही दिया। फिर करेंसी को लेकर कुछ दिन तक शगल रहा। कितनी ले जाएं, कहाँ एक्सचेंज होगी, क्या रेट है --- उफ्फ।

मैं अक्सर सोच में पड़ जाती कि अभी तो ये लोग पड़ोस के भूटान जा रहे हैं अगर कहीं योरोप टूर पर जाना हो तब क्या करेंगे ? सोच कर ही आयोजक का चेहरा याद आता कि बस ----हा हा

आखिर वो दिन भी आ गया जब यात्रा की शुरुआत होनी थी। कुछ को ट्रेन से और कुछ को हवाई जहाज़ से न्यू जलपाई गुड़ी और बागडोगरा हवाई अड्डे पर पंहुचना था। इस बीच आयोजक ने पूरा टूर प्रोग्राम बार-बार ग्रुप में साझा किया था औऱ छोटी बड़ी हर बात को बड़ी अच्छी तरह समझाया था सो हर चीज़ बिल्कुल स्पष्ट थी सबको।

हम दिल्ली-एनसीआर वालों ने ट्रेन से ही जाने का निर्णय लिया । पहले मैं वाया एयर ही जा रही थी पर फिर जब अधिकतर साथी ट्रेन से जा रहे थे तो मैने भी सबके साथ ट्रेन से ही जाने का फैसला किया। सबका साथ सबका विश्वास जो था।

चौबीस घण्टे का सफर था पर कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। एक दूसरे की पूरी-सब्ज़ी और अचार खाते , गपशप करते, कविता सुनते सुनाते रास्ते का पता ही नही चला। सफर में कुछ नए चेहरे भी थे पर वो अब अपने से हो गए थे। एक मजेदार बात और हुई। हमने एक लघु फ़िल्म की शूटिंग भी कर डाली। किशोर जी ने उसी समय पटकथा लिखी। हम सबने अपने-अपने डायलाग । कुछ इम्प्रोवाइजेशन भी किये गए। कुछ नेचरल सीन्स भी फ़िल्म में हैं जो ऐसे ही किशोर जी ने शूट कर लिए थे हमें बिना बताए। यह फ़िल्म चौकसी के नाम से यू ट्यूब चेनल पर है और खूब पसंद की जा रही है। आखिर हम सब थे तो कलाकार ही तो फ़िल्म कैसे ना बनती।

अगले दिन देर रात हमारी ट्रेन न्यू जलपाई गुड़ी पँहुची। वहां से हम सब एक होटल पँहुचे जो पहले से हमारे एक साथी ने बुक कर लिया था।

कुछ मत पूछिए उस होटल का किस्सा। हमेशा याद रहेगा। अरे पुलिस तक आ गई थी। इससे पहले मैं वो किस्सा सुनाऊं आप सबको एक बात बता दूं वो यह कि जब भी किसी होटल के रूम को बुक करो तो सबसे पहले उनके अटेंडेंट के सामने रूम की सारी चीजें चेक करो। टॉयलेट ख़ासतौर पर। जी हां। टीवी, ऐसी, गीज़र, व दूसरे इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स चलती हालत में है कि नहीं। टॉयलेट की सीट, वाशबेसिन इत्यादि सब कुछ। हादसा ही इतना भयानक था कि जीवन भर की सीख दे गया। हालांकि यह मेरे साथ नहीं हुआ पर हमारी दो सह यात्रियों के साथ हुआ जो हमारे ही होटल में थीं।

क़िस्सा यूं था कि देर रात न्यू जलपाई गुड़ी हम एक होटल पँहुचे तो हम छह महिलाएं और आयोजक उसी होटल में रुके व अन्य साथी अलगअलग होटलों में क्योंकि कि इस होटल में कम ही कमरे उपलब्ध थे। सब इतने थके हुए थे कि बस कमरा मिलते ही सब सो गए। अगली सुबह भूटान टूर ऑपरेटर की बस आ गई और हम सब उसमें बैठ गए। लेकिन यह क्या होटल वाले से बड़ा गेट लॉक कर दिया था ताकि हम बस से बाहर ही ना निकल सकें यानी हमें हाईजैक कर लिया गया था। पूछने पर पता चला कि उनके एक कमरे के कमोड की सीट टूटी हुई है जिसका हर्जाना वो पन्द्रह हज़ार मांग रहा था। उस कमरे में हमारी दो साथी रुकी थीं। पहले आराम से बात होती रही पर बात में गर्मा-गर्मी इतनी बढ़ी कि पुलिस बुलानी पड़ी। होटल वाला इतना बदतमीज़ और था कि ना तो उसे महिलाओं से बात करने की तमीज़ थी और ना बुज़ुर्गों से। लेकिन हमारी सभी महिलाओं ने ख़ूब मोर्चा संभाला। हम यह मानने को तैयार ही नहीं थीं कि सिर्फ एक रात में वो भी कुछ घण्टों में एक कमोड की सीट टूट सकती है और ना होटल वाला यह मानने को तैयार था कि वो सीट पहले से टूटी हुई थी क्योंकि किसी के पास कोई सबूत नहीं था। इस सबमे दोपहर के बारह बज चुके थे और हम सब उलझे हुए थे। बस मय सामान के खड़ी हुई थी और हम सब नज़र बंद थे। बेबस थे। गुस्से में थे। इधर बस वाला देरी के लिए उलाहना दे रहा था और उधर होटल वाला बिना हर्जाना दिए जाने नहीं दे रहा था। हम सबने सिर्फ़ सुबह की चाय ही पी रखी थी। सब भूखे-प्यासे लड़ रहे थे। जिरह कर रहे थे। अपना पक्ष रख रहे थे पर वो होटल वाला जैसे लड़ मरने को तैयार था। हमारे अन्य साथी भी जो अलग होटल्स में ठहरे थे वो भी आ गए थे। होटल वाले ने और भी दो चार स्थानीय बंगाली बुला लिए थे। मामला नाज़ुक हो गया था। हम सबको इस बात का थोड़ा डर भी था। आख़िरकार बहुत देर बाद पुलिस आई तो वो भी स्थानीय अफसर थे। वो होटल वाले के ही पक्ष में नज़र आए। तब आयोजक ने मुझे कहा कि मैं अपने पद व ऑफिस का हवाला देते हुए उस पुलिस अफसर से बात करूं। मामले की नज़ाकत देखते हुए मैंने पुलिस ऑफिसर को पहले सारा वाकया सिलसिलेवार बताया और फ़िर अपना परिचय देते हुए उन्हें बड़ी सूझबूझ के साथ लॉजिकली समझाया। हमारे कुछ वरिष्ठ साथियों ने भी हमारा पक्ष रखा। आखिरकार दो हज़ार की राशि पर बात पक्की हुई। इस बीच मैंने उनके एक कमरे की चाभी अपने कब्जे में कर ली थी। और हां, देर रात जो हमने एडवांस दिया था उसकी रसीद भी मैंने उसी वक़्त ले ली थी वरना वो होटल वाला उस एडवांस को भी नकारने की फिराक में था। ख़ैर, मामला रफ़ा दफ़ा हुआ और हम सब बस में बैठ कर रवाना हुए। सबकी सांस में सांस आई। सब उन दो महिलाओं को भी बुरा भला कह रहे थे जिनके कारण हम सबको यह सब झेलना पड़ा। पर उनकी भी क्या ग़लती थी। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि उनके कमरे का कमोड यह गुल खिलाएगा। उस के बाद यह हुआ कि हम भूटान यात्रा के दौरान जिस-जिस होटल में रुके उस उस होटल के कमरे की सारी चीज़ें पहले चेक कीं खासकर कमोड --- यह अपने आप मे हास्यस्पद है लेकिन दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। कुछ ऐसी ही स्थिति हम सबकी ही थी।

(आगे क्रमशः अगले अंक में)

कहानी -जोड़-घटाव

भाग-2

कहानीकार - नीरजा हेमेन्द्र

नीरजा हेमेन्द्र जी ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार हैं, आपके तीन उपन्यास “ललई भाई”, “अपने-अपने इन्द्रधनुष” और “उन्ही रास्तों से गुज़रते हुए” तथा सात कहानी संग्रह और चार कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का विजयदेव नारायण साही पुरस्कार, शिंगलू स्मृति सम्मान, फणीश्वरनाथ रेणु स्मृति सम्मान, कमलेश्वर कथा सम्मान, लोकमत पुरस्कार, सेवक साहित्यश्री सम्मान, हाशिये की आवाज़ कथा सम्मान आदि प्राप्त हो चूका है ।

“जोड़-घटाव” कहानी रामचंद्र के जीवन पर आधारित शानदार कहानी है, इसका पहला भाग आपके समक्ष प्रस्तुत है :

प्रसन्न होती हुयी बिटिया चली गयी। रामचन्द्र बैठा सोचने लगा कि ऑनलाईन व्यवसाय भी खूब रहा। कई कम्पनी बाजार में भाँति-भाँति के ऑफर लेकर जनता में अपनी पैठ बना चुकी हैं। बिटिया बता रही थी कि हर नाप के सिले-सिलाए डिजायनर सूट, ब्लाउज, साड़ियाँ, बच्चों के कपड़े आदि बाजार में हैं। घरेलू उपयोग की अनेक चीजें जैसे टी0 वी0, फ्रीज, मिक्सी, घड़ियाँ आदि सब कुछ बाजार में हैं। त्योहार के अवसर पर सभी चीजों पर आकर्षक छूट भी है।

बिटिया यह भी बता रही थी कि उसके साथ की अधिकांश लड़कियाँ मोबाइल से ऑनलाईन कपड़े-लत्ते और फैशन की अन्य सभी चीजें खरीदती हैं। वे बाजार से बहुत कम खरीदारी करती है।.....रामचन्द्र सोच में पड़ गया कि क्या यही कारण है बाजार में बिक्री की गिरावट की? त्योहार, पर्व मात्र ऑनलाईन शॉपिंग वालों के लिए ही तो नहीं है। बाजार में बैठकर दुकानदारी करने वालों के लिए भी तो है। तो ग्राहक उतनी संख्या में दुकान पर क्यों नही आ रहे हैं जितनी पहले आते थे? जब कि दीपावली समीप है। रामचन्द्र को इन प्रश्नों का उत्तर नही मिल रहा था। भोजन का समय हो गया थां। पत्नी ने आवाज़ दी।

रामचन्द्र उठ कर भोजन के लिए चल दिया।

“पापा, मैंने सलवार-सूट के लिए आर्डर कर दिया है। दो-तीन दिनों में कम्पनी का आदमी दरवाजे पर आ कर मेरा आर्डर दे जाएगा। सूट लेने के बाद मैं उसे पैसे दूँगी।” बेटी के चेहरे की प्रसन्नता रामचन्द्र से छिपी न थी।

“पापा, आप पैसे दे दीजिएगा सूट के लिए। मान लीजिए जिस समय वो व्यक्ति सामान ले कर आये और उस समय घर में न रहूँ तो मम्मी पैसे दे कर सामान ले लेंगी।” बिटिया ने रामचन्द्र से कुछ पैसे मांगते हुए कहा।

“ठीक है, और प्लाजो के लिए कितने पैसे दे दें?” रामचन्द्र ने पूछा। वह जानता है कि बिटिया ने कुर्ता के साथ प्लाजो भी आर्डर किया है।

“पापा, दोनों उतने पैसों में ही आ जाएंगे।” बिटिया ने कहा।

“अच्छा ?” कहते हुए रामचन्द्र ने जेब में हाथ डाला और बिटिया के हाथ पर उसके कपड़ों के पैसे रख दिये। खुश होती हुई बिटिया माँ के पास चली गयी।

“माँ, ये पैसे रखो। कम्पनी का आदमी आएगा तो उसे ये पैसे दे कर मेरा सूट ले लेना।” बिटिया माँ से कह रही थी।

“बिटिया, तुमने सूट ले लिया और तुम्हें कपड़ा, सिलाई या नाप पसन्द न आया तो भी तुम्हें वो कपड़ा पहनना ही पड़ेगा। दुकान तो है नहीं कि तुम अपनी पसन्द का कपड़ा ले सकती हो?” रामचन्द्र के मन में प्रश्न उठा और बिटिया से पूछ लिया। इस प्रश्न के पीछे कदाचित् रामचन्द्र के मन में दबी हुई यह इच्छा ही थी कि बिटिया और उसकी सभी सहेलियाँ दुकान से ही वस्त्र खरीदें।

“पापा, पसन्द न आने पर उसमें लौटाने का भी ऑप्शन है। कम्पनी का आदमी घर आकर कपड़े वापस ले भी जाएगा। पैसे मेरे एकाउण्ट में शीघ्र आ जाएंगे।” बिटिया ने एक और जानकारी से रामचन्द्र को अवगत् करा दिया।

अगले दिन रामचन्द्र अपने समय से दुकान पर गया। प्रतिदिन की भाँति दिन भर दो-चार ग्राहक आये गये। कुछ ने कपड़े खरीदे तो कुछ ने देखा और बिना खरीदे वापस चले गये। ग्राहकों की कम संख्या देखकर रामचन्द्र सोच रहा था कि दुकान पर पहले जैसी रौनक नही। मालिक अपने नियत समय पर दुकान पर आकर बैठ गये थे।

“मालिक, कुछ पैसे बढे नही हैं इस माह? ” दोपहर के भोजन के समय जब दुकान में ग्राहक नही थे, तब अवसर देख कर रामचन्द्र ने कहा।

“हाँ, नही हो पा रहा है। क्या करें? ” मालिक ने कहा।

“मालिक, महंगाई बहुत बढ़ गयी है। घर चलाना कठिन हो रहा है। कुछ बढ़ जाता तो?” सिर झुकाये रामचन्द्र ने कहा।

“तुम्हारी बात तो ठीक है रामचन्द्र। किन्तु ये बताओ कि कोरोना समय में कितने माह बन्द थी दुकान?” रामचन्द्र सिर झुकाये मालिक की बात सुन रहा था।

“कई महीनों बाद किसी प्रकार दुकान खुली भी तो कितने ग्राहक आते थे? बहुत दिनों तक तो दुकान खुलती थी और बोहनी हुए बिना बन्द हो जाती थी। और रामचन्द्र तुमने तो देखा था कि दुकान में नीचे की तह में रखे कपड़े खराब हो गये थे जिन्हें नष्ट करना पड़ा।

उस समय का टूटा बाजार, अब दो वर्ष होने को आ रहे हैं, अभी तक सम्हल नही पाया है।” मालिक की बात रामचन्द्र ध्यान से सुन रहा था। उसने मन ही मन विचार किया कि मालिक की बातों में सच्चाई है। वह कुछ बोल न सका।

“मेरी भी इच्छा होती है रामचन्द्र कि तुम लोगों की पगार में कुछ न कुछ बढ़ा दूँ। त्योहार के नाम पर ही सही कुछ पैसे बढ़ा दूँ। किन्तु नहीं हो पा रहा है। क्या मैं नही चाहता? कई दिनों से जोड़-घटाव कर रहा हूँ। किन्तु लाभ से अधिक दुकान के खर्चे निकल जा रहे हैं। मैं कैसे-क्या करूँ कुछ समझ में नही आ रहा है? ” मालिक कहते जा रहे थे। मालिक के चेहरे पर पसरी विवशता रामचन्द्र से छुपी न रह सकी।

“कोई बात नही मालिक। आपकी कृपा से दाल-रोटी चल रही है। यही बहुत है।”कह कर रामचन्द्र ने दोनों हाथ जोड़ लिए।

रामचन्द्र कपड़े के काउण्टर पर आ कर खड़ा हो गया। जो उसकी नीयत जगह थी। बीच-बीच में आने वाले इक्का-दुक्का ग्राहकों को वस्त्र दिखता जा रहा था। कुछ पसन्द कर खरीद रहे थे, कुछ मात्र देख कर बिना कुछ लिए चले जा रहे थे।

रात्रि हुई। नौ बजे दुकान बन्द हुई। दुकान पर काम करने वाले दोनों लड़के दुकान समेटवा कर अपने अपने घर चले गये। मालिक भी सामने खड़ी अपनी चार पहिये गाड़ी की ओर बढ़ चले। रामचन्द्र ने अपनी साईकिल पर बैठ कर पैडल मारा और घर की ओर चल दिया।

......साईकिल चलाते-चलाते रामचन्द्र विचारों के प्रवाह में बहता जा रहा था।......बाजार की कमर तोड़ने में कोरोना की मुख्य भूमिका तो है ही, ये ऑनलाईन शॉपिंग भी कम उत्तरदायी नहीं है।

क्या इनसे बाजार प्रभावित नही है?.....विचारों के प्रवाह में सोचता-विचारता रामचन्द्र साईकिल चलाता चला जा रहा था कि इन समस्याओं का उत्तरदायी कौन है? बाजार आख़िर इतना मन्दा क्यों हैं?

ग़ज़ल © हरिलाल राजभर ´कृषक´
घोसी, मऊ

समझो महज़ न ख़्वाब हमारा ये गाँव है
खिलता हुआ गुलाब हमारा ये गाँव है

बिजली की रोशनी पे करे शह्र गर गुमां
ख़ुद चाँद आफ़ताब हमारा ये गाँव है

इज़्ज़त पे बात आती है जब-जब भी मुल्क की
बनता भी इंक़िलाब हमारा ये गाँव है

शहरों के जैसे क़ल्ब में रखतान गंदगी
पढ़ लो खुली किताब हमारा ये गाँव है

अस्लाफ़ फ़ख्र इसपे अब आखिर न क्यूँ करे
मूंछों का उनके आब हमारा ये गाँव है

थक जायेंगे सवाल सभी तेरे कर यक़ीं
हर एक का जवाब हमारा ये गाँव है

दौलत के बादशाह क्या तुझको नहीं पता
दिल का बना नवाब हमारा ये गाँव है

आँखें दिखाना छोड़ दे 'हरिलाल' तू इसे
सैलाब का भी ताब हमारा ये गाँव है

काव्य-सरिता अवरुद्ध क्यूँ हैं

© अश्वनी अकल्पित, नयी दिल्ली

हाथ ने कलम थामी है,
नोक पन्नों पर रखी है
ना जाने कितनी बातें,
विचार, कहानियां, इच्छाएं
शब्द-सागर में डूबने को आतुर हैं -
पर कागज से कलम तक का ये सफर
इतना आसान नहीं है
बीच में आ घेरते हैं
ना जाने कितने अंतर्द्वंद
काव्य-सरिता के बीच
खड़े हो जातीं हैं बांध बनकर
ना जाने कितनी समीक्षायें और आलोचनाएँ
और फिर -
इन बंधनों के भंवर में
छटपटा कर दम तोड़ देती हैं
ना जाने कितनी कवितायेँ !

कवि डॉ धनञ्जय शर्मा जी की दो कवितायेँ

एसी. प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सर्वोदय पीजी कॉलेज, घोसी, मऊ

दिया और बाती

आओ हम दिए को दिए से जलाएं,
जगत से सभी यूं अंधेरा मिटाएं।
है कल्लू की मड़ई मदन की कोठरी,
जले दीप सबमें प्रसन्नित मुरारी ।
कण कण हो रोशन जले रोशनी हो,
रहे न कहीं पर तम का सितम हो।
ज्ञान की ऐसी पावन ज्योति जलाएं,
खुद को जलें अप्प दीपक बनाएं ।
आओ हम दिए को दिए से जलाएं...२

जैसे जलती हो बाती औ तेल जल रहा है,
लोग कहते हैं देखो दिया जल रहा है।
वैसे हम भी जलें और तुम भी जलो ,
स्नेह बाती में मिलकर दिया सा जलो।
राम ने काम कर जग अंधेरा मिटाया,
दिया रोशनी जग को सुंदर बनाया।
बैर नफरत मिटा प्रेम दीपक जलाएं
आओ मिल सभी हम दिए को जलाएं।।

।। मंथन।।

लोकतंत्र में मंथन जारी है,
अगले चुनाव की तैयारी है।
सांसद से सड़क तक
विकास बड़ा भारी है
मंथन जारी है..
विकास! विकास! विकास!
मजलिस से महफिल तक
गिनाए जा रहे हैं सभी
लाठी पर टंगे लंगोट की तरह
झुलाए जा रहे हैं सभी
विकास का एजेंडा
गिनाए जा रहे हैं सभी
पर मंथन जारी है
विकास के ऊपर जनमत भारी है
अगले चुनाव की तैयारी है
मैं पूछता हूं,
जनमत किधर है ?.....
जातिवाद जिधर है,
सबकी उधर नजर है।
विकास के ऊपर खिलने लगे हैं
अनेक जातियों के फूल
कुछ लाल कुछ हरे कुछ नीले कुछ बेरंगे
नेता जी कहिन है
जन पर जो जाति भारी है
उसकी अगली तैयारी है
लोकतंत्र में मंथन जारी है।।

विलुप्त होता जायेगा प्रेम © मनीष उपाध्याय मऊ, उत्तरप्रदेश

गिद्ध,गौराया,तितली और चीता की तरह
विलुप्त होता जायेगा प्रेम भी।
पर्व, उत्सव, उमंग, उल्लास
अब बस किताबों में मिलेंगे
ओझल हो जायेंगे रिश्ते-नाते, सगे-संबंधी सब

डार्विन कहता है कि हम आगे बढ़ती दुनिया में
जानवर से इंसान में परिवर्तित हुए।
मैं इस सिद्धांत को कुछ ऐसे समझता हूं
कि विकास के क्रम में-
हमारा शरीर जानवर से इंसान बना
जबकि मानसिकता इंसान से जानवर बन गई।

हमने छल किया है
अपने पुरखों के सहेजे संस्कारों के साथ
हमने नैतिकता, मानवता, प्रेम और परोपकार को
बारूदों के प्रभाव से बने मलबों के ढेर से तौला है।

जिन बातों पर आनी चाहिए हमें शर्म
उन बातों का-
हमने उपनिषदों की तरह प्रचार किया है।
जिन अमानवीय प्रवृत्तिवों का उन्मूलन कर
उनका नाश करना था, हमने उनका प्रसार किया है।

ये दुनिया जो धर्म, सिद्धांत, गीत, साहित्य,
दर्शन और रचनात्मकता से भर सकती थी,
उसे हमने युद्ध, क्रूरता, बलात्कार, हत्या,
छल, प्रपंच, धमाकों और पीड़ाओं से भर दिया है।